# अध्याय – 7: परिधान की फिटिंग

7.1 स्वरूप (पैटर्न) विकास

इस उद्योग की शुरुआत में, पैटर्न बनाने का काम कुशल श्रमिकों द्वारा किया जाता था, जो मुख्य रूप से अनपढ़ थे, डब्ल्यू. एच. ह्यूम ने अपनी किताब ष्परिधान के स्वरूप (पैटर्न) बनाने का अभ्यास में लिखा है कि वस्त्र उद्योग वर्णनात्मक डेटा को लागू करने के व्यवस्थित तरीकों को विकसित करने में उत्पादक रहा है, इनमें से बहुत सी पैटर्न प्रणालियों का स्पष्ट रूप से वर्णन नहीं किया गया है। विभिन्न पैटर्न प्रणालियों की तकनीक पर कई सालों के अनुसंधान से पता चलता है कि इसके लिए अपनाई जाने वाली विधियां असंबंधित, या

पैटर्न बनाने के सिद्धांत द्वारा **व्यक्त** हो सकती हैं। प्रणालियां यह नहीं बताती हैं कि लागू सिद्धांतों में व्यापक बदलाव किया गया है और ये मान्यताओं पर आधारित हैं।

फिलिप कुनिक ने महिलाओं और बच्चों के परिधानों के लिए आधुनिक आकार और पैटर्न निर्माण की अपनी पुस्तक में लिखा है कि अभी भी थोक व्यापार के लिए पैटर्न निर्माण का मसौदा तैयार करने के लिए एक परिधि माप के आधार पर पढ़ाना एक आम बात है केवल बिदु निर्धारित करने या भागों का पता लगाने के लिए ही नहीं बल्कि किसी भी आकार के एक परिधान का मसौदा तैयार करने के लिए भी यही होता है। किसी भी थोक व्यापार में शायद ही ऐसा होता है, जहां एक मानक आकार संकेत में एक नमूने को काटना एक सामान्य व्यवहार है, जिसमें सटीक आयाम का पता नहीं होता है और आनुपातिक माप का विकल्प के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए नतीजतन, एक काल्पनिक पैमाने पर तैयार मसौदे के साथ बने चरम आकार, शायद ही कभी एक संतोषजनक फिटिंग देते हैं।

एलेगा की पुस्तक सहित यूरोप में 16 वीं सदी से 19 वीं सदी तक पैटर्न काटने की मात्र 18 प्रकाशित पुस्तकें थीं। इस तथ्य के लिए काफी हद तक उस समय के पैटर्न निर्माता, दर्जी और पोशाक निर्माताओं के बीच प्रचलित निरक्षरता और असंख्यात्मक कार्यो के उच्च स्तर को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। परंपरागत रूप से कौशल को प्रदर्शन और मौखिक निर्देश के माध्यम से प्रशिक्षुओं को पारित किया गया।

7.2 परिधान की फिटिंग

परिधान की फिटिंग मानव शरीर के आकार और परिधान के समोच्च के बीच का संबंध है। एक अच्छी तरह से फिट परिधान वह परिधान है जो बिना किसी खींचतान या कपड़े के विरूपण के सीधे, मनभावन अनुपात, शरीर पर किसी कसाव,या दूरी नहीं रखते हुए, गतिविधियों के लिए पर्याप्त आसानी के साथ शरीर पर आसानी से और समान रूप से लटके। जब तक अन्यथा वांछित न हो, किनारी फर्श के समानांतर रहे और परिधान के बाँह के खांचें और क्राच शरीर पर कसाव न बनाएं। इसे पैटर्न के प्रत्येक भाग में मानव अंगों के लिए सही होने पर लंबाई और चौड़ाई की एक साधारण बात के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

7.2.1 फिटिंग से परिचय

फिटिंग शब्द कपड़े के तीन आयामी मानव शरीर के अच्छी तरह से अनुरूप होने को संदर्भित करता है। अच्छी फिटिंग ग्राहकों की संतुष्टि के लिए महत्वपूर्ण है। हालांकि, अक्सर एक व्यक्ति की इच्छानुसार सही रंग, कीमतों और शैली के कपड़े खोजना आसान होता है पर एक अच्छी तरह से फिट परिधान मिलना आसान नहीं होता। यदि परिधान वांछित पहनने वाले के लिए अच्छी तरह से फिट नहीं है तो यह एक शानदार डिजाइन, सुंदर कपड़े और उत्तम कारीगरी के प्रभाव को नष्ट कर देता है। डिजाइन **व** निर्माण **में भी लापरवाही** के कारण भी फिटिंग की समस्याएं हो सकती है या यह एक व्यक्ति के शरीर की भिन्न विशेषताओं का नतीजा हो सकता है। कोई दो शरीर एक जैसे नहीं होते हैं, और कभी कभी एक ही शरीर के दाएं और बाएं हिस्से में एक दूसरे से दर्पण की छाया जैसी समानता नहीं होती।

नई तकनीक इन समस्याओं को दूर करने का वादा करती है एक नई कंप्यूटर प्रणाली दृश्य रूप से तीन आयामों में एक व्यक्ति के शरीर की माप ले सकती हैं। इसके पश्चात् डेटा को एक कम्प्यूटरीकृत, अलग–अलग पैटर्नों में बदला जाता है, माप डेटा की प्राप्ति के 7 मिनट के भीतर इस विधि द्वारा एक आदमी के सूट की डिजाइन कटने और सिलाई करने के लिए तैयार हो जाती है। **परिणामस्वरूप** वस्त्र सही फिट होता है**,** क्योंकि कम्प्यूटरीकृत स्कैनर शरीर के आकार में उन सूक्ष्म बारीकियों का पता लगाता है जिन्हें पढ़ने में सामान्य माप सिस्टम असमर्थ हैं। ये पद्धतियों के परीक्षण के चरण में हैं लेकिन वे महंगी होंगी और आसानी से उपलब्ध होने में एक लंबा समय लेंगी।

इस पर अलग–अलग राय है कि एक अच्छी फिटिंग में क्या–क्या शामिल है। फिट के बारे में व्यक्तिगत वरीयताएं फैशन के मौजूदा रुझान, सांस्कृतिक प्रभावों, आयु, लिंग, अंगों के प्रकार, और जीवन शैली से संचालित होते हैं। परिधान के अंतिम उपयोग का वांछित उद्देश्य भी फिट को प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति को एक ट्रैक सूट जैसे दर्शकों के खेल के कपड़ों की तुलना में सक्रिय खेलों के लिए अधिक आराम की जरूरत होती है।

मानव आबादी में होने वाले परिवर्तनों की वजह से आकार तालिका और शरीर आयामों के बीच संबंध स्थिर नहीं रहते। ब्रिटेन, अमेरिका, चीन, जर्मनी और अन्य देशों में हाल के शरीर सर्वेक्षणों ने साबित कर दिया है कि शरीर के एक निश्चित प्रकार के लिए बनाए गए

परिधान की आकार प्रणाली उस आबादी के 25 प्रतिशत से अधिक को शामिल नहीं करती जिनके लिए इसे बनाया गया है। सही आकार अच्छे फिट और ग्राहकों की संतुष्टि के लिए एक पूर्व शर्त है। फिट आकार बनाने का एक कार्य है और यह एक परिधान के आराम और स्थायित्व को प्रभावित करता है। अक्सर एक महत्वपूर्ण मुद्दे के रूप में आकार की अनदेखी की जाती है।

## 7.3 फटिंग के तत्व

फिट के तत्व, वे पैमाने हैं, जिन पर फिट का मूल्यांकन आम तौर पर आधारित होता है, इन्हें फिट के पांच शास्त्रीय तत्वों के रूप में भी जाना जाता हैः–

दाने (ग्रेन): एक अच्छे फिट के लिए परिधान को सही दाने पर या दूसरे शब्दों में दाने पर काटा जाना चाहिए। दाने पर तैयार एक परिधान समान रूप से लटकता है और सममित प्रकट होता है। अगर परिधान दाने पर नहीं है, तो वह सीधे नहीं लटकेगा। परिधान और सीवन रेखाएं मुड़ी हुई या सिकुड़ी हुई हो सकती हैं क्योंकि परिधान का प्रत्येक आधे भाग का कपड़ा अलग बर्ताव कर सकता है। दानों की रेखा में विचलन गलत ढ़ंग से काटने या सिलाई या पहनने वाले की एक गलत मुद्रा या अंगों की अनियमितताओं का परिणाम है, जो परिधान के दानों के साथ हस्तक्षेप कर सकते हैं क्योंकि यह शरीर पर लटकता है।

सेटः सेट शब्द किसी भी अवांछनीय सिकुड़न के बिना एक चिकने फिट को संदर्भित करता है। खराब सेट की वजह से पड़ने वाली सिकुड़नों को इस्त्री से नहीं हटाया जा सकता, बल्कि यह परिधान पहनने वाले की फिट को प्रभावित करता है। आमतौर पर सेट में तब सिकुड़न पड़ती है जब परिधान पहनने वाले के लिए बहुत बड़ा या बहुत छोटा हो और पहनने पर परिधान लटकता है या फंसता है।

रेखाः शरीर की प्राकृतिक लाइनों के साथ परिधान की संरचनात्मक लाइनों के संरेखण को दर्शाती है। परिधान की बगल की सीवन को शरीर के पक्ष के केन्द्र से एक साहुल रेखा की तरह नीचे लटकना चाहिए। इसे फर्श से लंबवत रहना चाहिए। सामने के केंद्र और पीछे के केंद्र को शरीर के सामने और पीछे के केंद्र पर होना चाहिए और फर्श से लंबवत रहना चाहिए। कंधे के डार्ट जैसे डार्ट्स और सिलाई को शरीर के अंगों पर इस तरह से फिट होना चाहिए, जैसा वांछित हो। गले की रेखा, कमर, कूल्हे की रेखा और बाँह के छेद (आर्म होल) जैसी अन्य सीवन रेखाओं को धीरे–धीरे मोड़ कर वक्र बनाना चाहिए। खराब डिजाइन या निर्माण परिधान की रेखाओं को बरबाद कर सकती है। यहाँ तक कि अंगों की अनियमितताएं भी परिधान को विकृत कर सकती हैं।

संतुलनः तब होता है जब परिधान संतुलित हो। परिधान को आगे और पीछे और बगल से देखने पर परिधान का दाहिना और बायां पक्ष समान रूप से संतुलित या सममित दिखाई देते हैं। एक स्कर्ट तब संतुलित होता है जब पहनने वाले के पैर केंद्र में हों और स्कर्ट के सामने या पीछे के भाग को छू नहीं रहे हों। संतुलन परिधान के दानों और रेखाओं से संबंधित है। अगर दानों से हट कर काटा जाता है, तो असमान रूप से लटकने के कारण परिधान संतुलन से बाहर हो जाता है। इसके अलावा, अगर परिधान की रेखाएं शरीर की रेखाओं का अनुसरण नहीं करतीं तो यह संतुलन से बाहर रहता है। गलत मुद्रा या पहनने वाले के शरीर में समरूपता का अभाव इसका एक अन्य कारण है।

आसानीः एक परिधान में फैलाव की राशि को दर्शाती है। आसानी पहनने वाले के शरीर की माप और परिधान की माप के बीच का अंतर है। आसानी दो प्रकार की होती है; फिटिंग में आसानी और डिजाइन में आसानी। फिट मे आसानी शरीर के साथ सीधे संपर्क में है और आराम के कारक के लिए जिम्मेदार है तथा परिधान के डिजाइन की आसानी सौंदर्य की उपस्थिति के लिए है। एक परिधान में पहनने वाले की वास्तविक माप से परे पर्याप्त आसानी शामिल होनी चाहिए जिससे उसे चलने, बैठने, पहुँचने और यहां तक कि साँस लेने जैसी साधारण गतिविधियों में आसानी हो। इस संदर्भ में आसानी को फिटिंग आसानी कहा जाता है। डिजाइन आसानी फिटिंग आसानी में जोड़ी गई अतिरिक्त शैली परिपूर्णता है। सभी वस्त्रों में फिटिंग की आसानी होती है, लेकिन डिजाइन आसानी वैकल्पिक है, यह विशुद्ध रूप से उपस्थिति की खातिर और परिधान को अपनी शैली देने के लिए जोड़ी जाती है।

## 7.4 फिट का मूल्यांकन

परिधान के फिट के मूल्यांकन में, परिधान के सभी पक्षों की जांच की जानी चाहिए। फिटिंग में ऊपर से शुरू होकर नीचे की तरफ बढ़ना चाहिए। फिट का विश्लेषण एक जटिल प्रक्रिया है और यह उद्योग और ग्राहकों, दोनों के लिए एक चुनौती बनी हुई है। परिधान का

फिट एक जटिल मुद्दा है लेकिन सही कपड़े के सही रूप को पहचानने के लिए इसका बहुत महत्व है, और एक 3 डी नकली अनुकार रूप जैसी विभिन्न तरह की प्रौद्योगिकियों का इस्तेमाल किया जाता है, और यह अधिक कुशल, उत्पाद विकास और गुणवत्ता नियंत्रण की प्रक्रिया में निर्णय लेने का नेतृत्व कर सकता है। शरीर के निम्नलिखित अंगों को इस प्रकार प्रकट होना चाहिए।

### 7.4.1 कंधे

कंधे **चकने** दिखाई दें और सहज महसूस **होना** चाहिए। सीवन कंधे के शीर्ष पर पड़नी चाहिए। नियमित शैलियों में हाथ के छेद की सिलाई पहनने वाले के कंधे के किनारे पर पड़नी चाहिए। परिधान के कंधे काफी **चौड़े** हों, ताकि आस्तीनें ठीक से लटकी रहें। अगर कंधे तंग हैं, तो आस्तीन के ऊपरी बांह में खिंचाव और सिकुड़न पड़ेगी। अगर फैशन के रुझान के लिए कंधे के संकीर्ण या व्यापक होने की आवश्यकता होती है तब भी पैटर्न में हिलने–डुलने के लिए पर्याप्त जगह होनी चाहिए। परिधान के कंधे की ढलान का पहनने वाले के कंधे **की** ढलान से मेल होना चाहिए।

### 7.4.2 वक्ष

अगर परिधान की वक्ष/छाती बहुत छोटी है, तो आगे या पीछे के केंद्र की सिलाई या खुले भाग पर खिंचाव पड़ेगा और वे खुल सकते हैं। एक बड़ा वक्ष या अत्यधिक विकसित छाती अक्सर सामने के केंद्र पर बटन के छेद के खुलने या फैलने का कारण बन सकते हैं, साथ ही कपड़ा ऊपर चढ़ जाएगा क्योंकि बड़े स्तनों का वक्र अधिक लंबाई लेता है। एक अच्छी तरह से फिट डार्ट हमेशा शरीर के वक्र के सबसे पुष्ट भाग की ओर इशारा करता है, जिस पर इसे फिट होना है। डार्ट की नोक को हमेशा सबसे पुष्ट भाग के लगभग एक इंच पहले समाप्त करना चाहिए। बहुत छोटे डार्ट्स या वक्र के सबसे पुष्ट भाग तक विस्तृत डार्ट कि नोक पर एक बुलबुला बनाते हैं। परिधान में कहीं भी होने वाले डार्ट्स को एक ही सिद्धांत का पालन करना होता है। निर्माण में तेजी लाने के लिए डार्ट को समाप्त करने की प्रथा चोली के अगले भाग पर विकर्ण झुर्रियां पैदा करती है।

### 7.4.3 गले की रेखा

गले की रेखा को काफी बड़ा होना चाहिए ताकि यह बिना किसी खिंचाव या दबाव के फिट हो सके लेकिन इतनी बड़ी नहीं कि यह शरीर के सामने और पीछे के भाग पर लटकती रहे। सामने का बुनियादी गला हमेशा पीछे की तुलना में कम होना चाहिए।

### 7.4.4 कॉलर

कॉलर का फिट गर्दन की परिधि पर कॉलर को रखने में सबसे महत्वपूर्ण कारक है। कॉलर की परिधि में गले की रेखा से कम से कम चौथाई इंच बड़ी होनी चाहिए या इसे गर्दन और कॉलर के बीच दो उंगलियों डालने के लिए पर्याप्त होना चाहिए। एक ठीक से फिट कॉलर चिकना होगा और पहनने वाले के चलने पर अपनी जगह पर बना रहेगा। यह इतना तंग न हो कि खिंचाव पड़े। एक तंग कॉलर असुविधाजनक होता है और गर्दन का बड़ा दिखाता है। लेकिन इसे इतना ढीला भी नहीं होना चाहिए कि इसमें दरार पड़े।

### 7.4.5 आर्म स्काई (मुहरा)

आर्म स्काई परिधान के लिए अच्छी तरह से फिट आरामदायक और आकर्षक होना चाहिए। आर्म स्काई इतना बड़ा होना चाहिए कि वह परिधान के आगे और पीछे खींचे नहीं, लेकिन इतना बड़ा भी नहीं है कि वह आर्म स्काई की परिधि में दरार डाले। एक अच्छी तरह से फिट आर्म स्काई में, आर्म स्काई का आधार बगल के करीब कट जाता है, लेकिन इतने करीब नहीं कि यह बगल में काटे। यह बगल के एक इंच नीचे काटा जाना चाहिए। **यह** आर्म स्काई के क्षेत्र में बिना सिकुड़न के पर्याप्त आराम, हिलने के लिए जगह, और अच्छी फिट प्रदान करता है। अगर आर्म स्काई काफी तंग है तो चुस्त और असहज महसूस होता है। सामने से आर्म स्काई को पीठकी अपेक्षा अधिक गहराई से काटा जाना चाहिए क्योंकि अधिकांश गतिविधियां सामने की ओर होती हैं।

### 7.4.6 आस्तीनें

आस्तीनें अच्छी तरह से फिट आकर्षक और आराम दायक होनी चाहिए। बुनियादी आस्तीन की परिधि काफी ढीली होनी चाहिए जिससे यह हाथ के आसपास बंधन न बने और क्षैतिज सिलवटें न पड़ें। एक तंग आस्तीन असहज होने के अलावा हाथ के सामान्य कार्यों को असंभव बना देती है। आस्तीन पहनने वाले की इच्छानुसार ढीली होनी चाहिए लेकिन परिधान को एक फिट जैकेट के नीचे पहनने में समस्या हो सकती है। एक अच्छी तरह से सेट जैकेट की आस्तीन सामने की ओर एक मामूली कोण के साथ लटकी होती है। डोलों पर आड़े दानों की रेखा फर्श के समानांतर रहनी चाहिए।

### 7.4.7 कमर

कमर का फिट होना आराम के लिए आवश्यक है। परिधान की कमर इतनी तंग नहीं होनी चाहिए कि यह बंधन लगे या मुड़ जाए। इसमें श्वास लेने और खाने के लिए पर्याप्त जगह होनी चाहिए और हाथ उठाने या काम करने के बाद इसे अपनी स्थिति में वापस आ जाना चाहिए। यह इतनी ढीली न हो कि शरीर से दूर रहे, ढलके, या एक टॉप या शर्ट को खोंसने या किसी अन्य परिधान के नीचे पहनने पर उभार बनाए। परिधान का सबसा संकरा हिस्सा पहनने वाले की कमर पर गिरना चाहिए। अगर कमर पर बटन लगे हों तो परिधान को बंद करने पर खिंचाव या तनाव नहीं पड़ना चाहिए। एक जैकेट को कमर पर काफी बड़ा होना चाहिए ताकि बटन बंद होने पर भी व्यक्ति बैठ सके।

7.4.8 कूल्हे

स्कर्ट या ट्राउजर की फिटिंग के लिए कूल्हे क्षेत्र का फिट होना महत्वपूर्ण है। अगर कूल्हे क्षेत्र में पर्याप्त जगह हो तो परिधान के अन्य भागों में आसानी से फिट करने के लिए बदलाव किया जा सकता है। कूल्हे, जांघ और पेट क्षेत्र में पर्याप्त जगह वाले वस्त्र, बिना खिंचाव, सिकुड़न या ऊपर उठे सही रूप से फिट होते हैं। ऊपर खुलने वाले पॉकेट, प्लीट या झरोखे से संकेत मिलता है कि परिधान कूल्हे या पेट क्षेत्र में तंग है। अगर परिधान के कूल्हे या जांघ क्षेत्र में अतिरिक्त बढ़त है तो इसमें खड़े मोड़ पड़ेंगे।

7.4.9 क्राच / सीट

पतलून और बंटे हुए अन्य परिधानों में आराम और स्थायित्व के लिए एक अच्छी तरह से फिट क्राच की आवश्यकता होती है। एक ठीक से फिट क्राच पहनने वाले को पैरों के बीच नहीं काटता और और नितंबों के आकार के अनुरूप होता है। क्राच क्षेत्र में थोड़ी आसानी होनी चाहिए पर अधिक नहीं। आम तौर पर पतलून के लिए क्राच क्षेत्र में एक इंच की आसानी बढ़त होनी चाहिए। क्राच सीवन को पीछे नितंबों पर लंबा और सामने की तुलना में अधिक घुमावदार और गहरा होना चाहिए। बड़े आकार के लिए पीछे की तरफ लंबे, गहरे और घुमावदार क्राच की आवश्यकता होती है। क्राच क्षेत्र से फैलने वाली विकर्ण सिकुड़नें क्राच के नितंबों के आकार को समायोजित करने के लिए पर्याप्त रूप से बड़े न होने का परिणाम हैं। सामने की विकर्ण सिकुड़नें भी पहनने वाले के बड़े पेट की वजह से हो सकती हैं। क्राच क्षेत्र से ऊपर की ओर निकलने वाली सिकुड़नें भी तंग और उच्च क्राच का संकेत करती हैं, जिससे रगड़ और **बेचैनी** होती है। क्राच क्षेत्र से नीचे की ओर निकलने वाली सिकुड़नों से एक कम और ढीले क्राच का संकेत मिलता है यह झूलता और लटकता है, घूमने को प्रतिबंधित करता है और गतिविधि में तनाव से रगड़ की संभावना बढ़ जाती है। अगर उठाव को लंबा या छोटा किया जाता है तो, कमरबंद को भी उठाया या कम किया जाना चाहिए। उभार को क्राच की लंबाई में लंबा या छोटा नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि इससे समस्या उत्पन्न हो सकती है।

फिटिंग का एक अन्य महत्वपूर्ण नियम है कि जब फिट नहीं हो रहा हो तब कैसे फिट किया जाए। कपड़े को केवल फिट ही नहीं, कुछ अधिक होने की जरूरत होगी। एक परिधान को शरीर पर इतना फिट होने की कोई जरूरत नहीं है कि यह बुरा दिखे, साथ ही अगर यह शरीर पर ठीक न लगे तो डिजाइन के साथ चिपकने की भी जरूरत नहीं है। असली विशेषज्ञता इस तथ्य में निहित है कि डिजाइन की रेखाओं और सुविधा की रेखाओं के बीच एक संतुलन कायम करने में सक्षम **हो**। यह करने की क्षमता एक कौशल है जो यह देखने और समझने के प्रशिक्षण से सीखा जाता है कि शरीर पर क्या फबेगा।

फिटिंग मूर्ति गढ़ने जैसा है यह एक तीन आयामी रूप बनाता है। अक्सर पूछे जाने वाला एक और सवाल है कि फिटिंग की जाँच कितनी बार होनी चाहिए, इस सवाल का जवाब है कि उतनी बार जब तक यह अच्छी तरह से फिट **न** हो जाए।

7.5 फिट के अन्य कारक

केवल गणितीय गणना और पैटर्न सुधार परिधान के ठीक से फिट होने की गारंटी नहीं दे सकते हैं। वे केवल एक सन्निकटन प्रदान कर सकते हैं जिसकी किसी विशेषता को जरूरत हो सकती है। अन्य विचारणीय बिंदु हैंः

♦ परिधान की शैली, क्या यह आप पर अच्छी लगती है या नहीं।
♦ परिधान में आवश्यक और पर्याप्त बढ़त।
♦पहनने वाले की मुद्रा और अलग आकार।

वास्तव में केवल एक कपड़े पर फिट की जाँच द्वारा इनका मूल्यांकन किया जा सकता है। परिधान को एक बार कपड़े पर काट दिए जाने के बाद केवल मामूली परिवर्तन ही किया जा सकता है। इसलिए फिट की जांच बहुत कुछ बरबाद होने से बचा सकता है। जब लोग किसी शैली के बारे में निश्चित हों, अनुभव से जानते हों कि पैटर्न को कैसे समायोजित करना है, यदि आवश्यक हो तो फिर से

काटने के लिए पर्याप्त सामग्री हो, आपात स्थिति में लेने के लिए पर्याप्त सीवन बढ़त हो, तो कई बार फिटिंग की जाँच आवश्यक नहीं होती है। लेकिन अगर कोई भी संदेह है, तो फिटिंग की जांच बहुत जरूरी है।

आमतौर पर इस्तेमाल की जाने वाली परीक्षण सामग्री प्रक्षालित या रूखा मलमल होता है, इसे अंतिम कपड़े के समान वजन में इस्तेमाल किया जाना चाहिए। अंतिम कपड़े के समान वजन के सादी बुनाई के पॉपलीन जैसे ठोस रंग के किसी अन्य कपड़े से भी काम चल सकता है। एक सादी सतह की सिफारिश की जाती है क्योंकि यह सभी **सीवनों**, डार्टों और अन्य शैली विवरणों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। पैटर्न को बिछाएं, अपने फिटिंग की जाँच की सामग्री को अंतिम परिधान के कपड़े के बराबर सावधानी से चिह्नित करें और काटें।

परीक्षण **कए हुए** मलमल को एक साथ रखें। वास्तविक सिलाई के बिना समाप्त परिधान का प्रभाव प्राप्त करने का सबसे तेज तरीका सभी रेखाओं को ओवरलैप और पिन करना है। पिन लगाना वही परिणाम और जानकारी देता है, जो एक व्यक्ति मशीन पर गए बिना प्राप्त करना चाहता है। पिन लगाना और उसे खोल कर फिर से पिन लगाना सिलाई को खोलने और फिर से सिलाई करने की तुलना में बहुत आसान है।

पिनों को, सीवन की सही रेखा में सही कोण पर लगाया जाना चाहिए, जैसे कि इस विधि में सिलाई पर कम तनाव या खिंचाव है, और इसमें दरार न हो। पतलूनों की फिटिंग की जाँच करते समय क्राच की सीवन पर पिन लगाने की बजाय उसे सिल लें
मलमल पर फिटिंग की जांच करें और पूरी तरह से संतुष्ट होने तक **उसमें** सुधार कर सकते हैं।

आवश्यक सुधारों को चिह्नित करें और परिधान के अंतिम पैटर्न के लिए उन्हें पेपर पैटर्न पर स्थानांतरित किया जाना चाहिए, जिसका अंतिम कपड़े को काटने के लिए उपयोग किया जाएगा, नए नॉच बनाएं क्योंकि सुधार के बाद पुराने ठीक नहीं भी हो सकते हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि परिवर्तन से अधिक समस्याएं नहीं उत्पन्न **होती** हैं, एक जैसी दो सीवनों की लंबाई की जाँच करें, जैसे कि अगर आपने सामने के पक्ष की सीवन के डार्ट इनटेक को सही किया है तो यह सुनिश्चित करें कि दोनों ओर की बगल की सीवनें अभी भी बराबर हैं या नहीं और यदि जरूरी हुआ तो आवश्यक परिवर्तन करें।

7.6 फिटिंग के तरीके
फिटिंग दो प्रकार की होती है:

एक पहला टेस्ट फिट जो पैटर्न बनाते समय मलमल पर किया जाता है। पैटर्न की फिटिंग की जांच करने के लिए एक बुनियादी फिट परीक्षण किया जाता है पैटर्न को प्रासंगिक सीवन बढ़त के साथ काटा जाता है और फिटिंग की जाँच के लिए टेस्ट की जाँच की जाती है। सुनिश्चित करें कि सीवन और डार्ट अपने स्थान पर **हों**। फिटिंग हमेशा परिधान की दाईं ओर से की जाती है क्योंकि इससे परिवर्तन और सुधार करना आसान होता है। **ये** सुधार परिधान की नई सीवन रेखाओं के लिए किए जाते हैं। आसानी और परिपूर्णता के लिए परिधान की जाँच करें। फिट में बटन और बटन के छेदों को सही स्थानों पर चिह्नित करना महत्वपूर्ण है।

दूसरा परीक्षण परिधान के अंतिम रूप से पूरा होने से पहले सिलाई के बाद किया जाता है। परिधान को सही जगह पर प्रासंगिक इंटरफेसिंग अस्तर के साथ सिलें और अच्छी तरह से दबाएं तथा डार्ट, सीवनों, प्लकरों की स्थिति की जांच करने के लिए अच्छी तरह से परीक्षण करें और बाहरी सिलाई को रेखांकित करें। इस प्रकार की फिटिंग परिधान के फिट को सही और परिष्कृत करती है।

अन्य समय पर, जब दुबारा फिटिंग आवश्यक हो, यदि तैयार परिधान बाजार से खरीदा गया हो तो उसमें एक व्यक्ति के आकार के अनुसार परिवर्तित करने या अगर व्यक्ति के शरीर के आकार में परिवर्तन हुआ हो, जैसे अगर कोई पतला हो गया है या वजन बढ़ गया हो या अगर एक बच्चा लंबा हो गया है तो परिधान को दुबारा फिट करने की आवश्यकता हो सकती है। प्रत्येक पैटर्न सीवन या क्षेत्र को सही करने और परिवर्तन के तरीके समस्याओं के प्रकार और फिटिंग दोष की प्रकृति पर निर्भर करते हैं।

सारांश

अध्याय में निम्न विषयों को शामिल किया गया है:
1. परिधान के फिट, आराम, दाने, सेट संतुलन और रेखा जैसे फिट के विभिन्न तत्वों की परिभाषा।

2. फिट के महत्वपूर्ण क्षेत्र और इनसे जुड़ी आम समस्याएं
3. फिटिंग के तरीके और फिटिंग की गणितीय पद्धति ।
4. फिट के मुद्दे और फिट की समस्याओं को सुलझाने के तरीके।
अभ्यास
1.अपने अलमारी की जाँच करें, फिट के विभिन्न मुद्दों की पहचान करें। कपड़ों को पहनने की कोशिश करें और देखें कि क्या आप उन्हें ठीक करने के तरीकों की पहचान कर सकते हैं।
2.अखबार और पत्रिकाओं से विभिन्न प्रकार की विशेषताओं की तस्वीरें जमा करें।

3. रिक्त स्थान को भरें:
क. फिटिंग ...... की तरह है जो एक ...... स्वरूप बनाता है।
ख. फिट की पांच तत्व हैं ......................, ..........., ................,............और .........हैं।
ग. आसानी .......... प्रकार की होती है, अर्थात् ........... और .......... आसानी।
घ. ३३३ तब होता है जब ३३३ संतुलन में हो।
ङ. परिधान को .............दाना कहा जाता है अगर यह................. .. कपड़े के दाने पर न काटा नहीं जाए तो यह अच्छी तरह से ............. नहीं होगा।
च. परिधान के बगल की सीवन को परिधान की ...........पर ......... सीधा होना चाहिए।
छ. परिधान का मूल्यांकन करने के ......... तरीके हैं।
ज. पिनों को ३३३ की ........ रेखा पर लगाया जाना चाहिए जिससे कि ..........और ......... में तनाव और खिचाव होता है।
झ. मलमल की ................. जांच करें और संतुष्ट होने तक सुधार करें............, जब तक नमूने के सभी............. सुधार न हो जाएं।
ञ. ............ एक परिधान में खिंचाव से संकेत मिलता है कि परिधान ..............है और ...... .. परतों से संकेत मिलता है कि ........... है।

शैली की विविधताएं

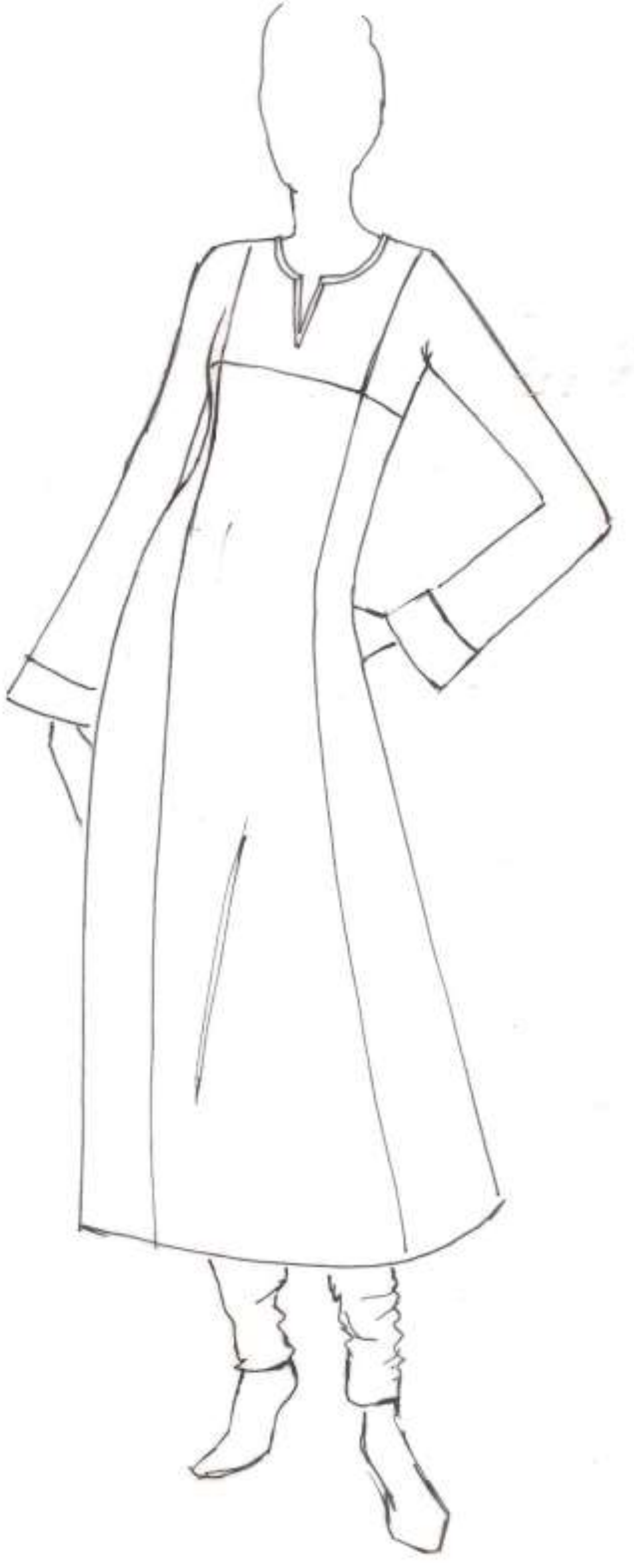

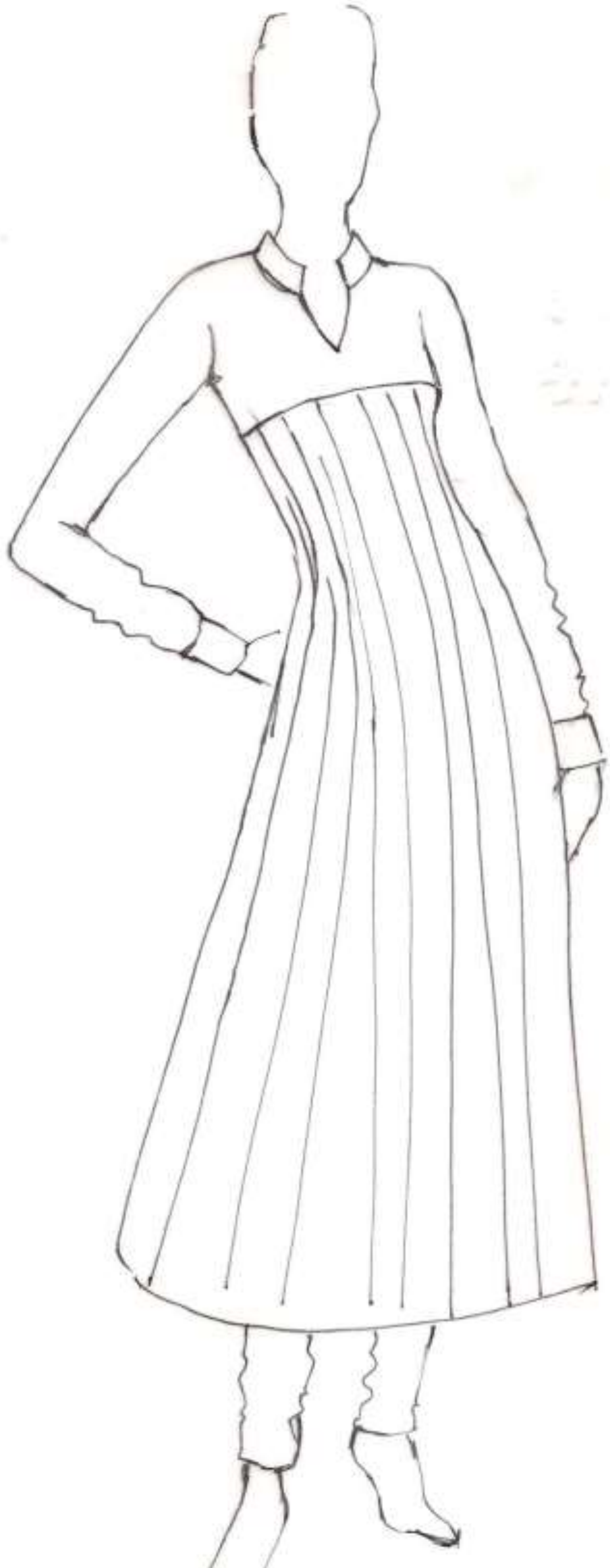

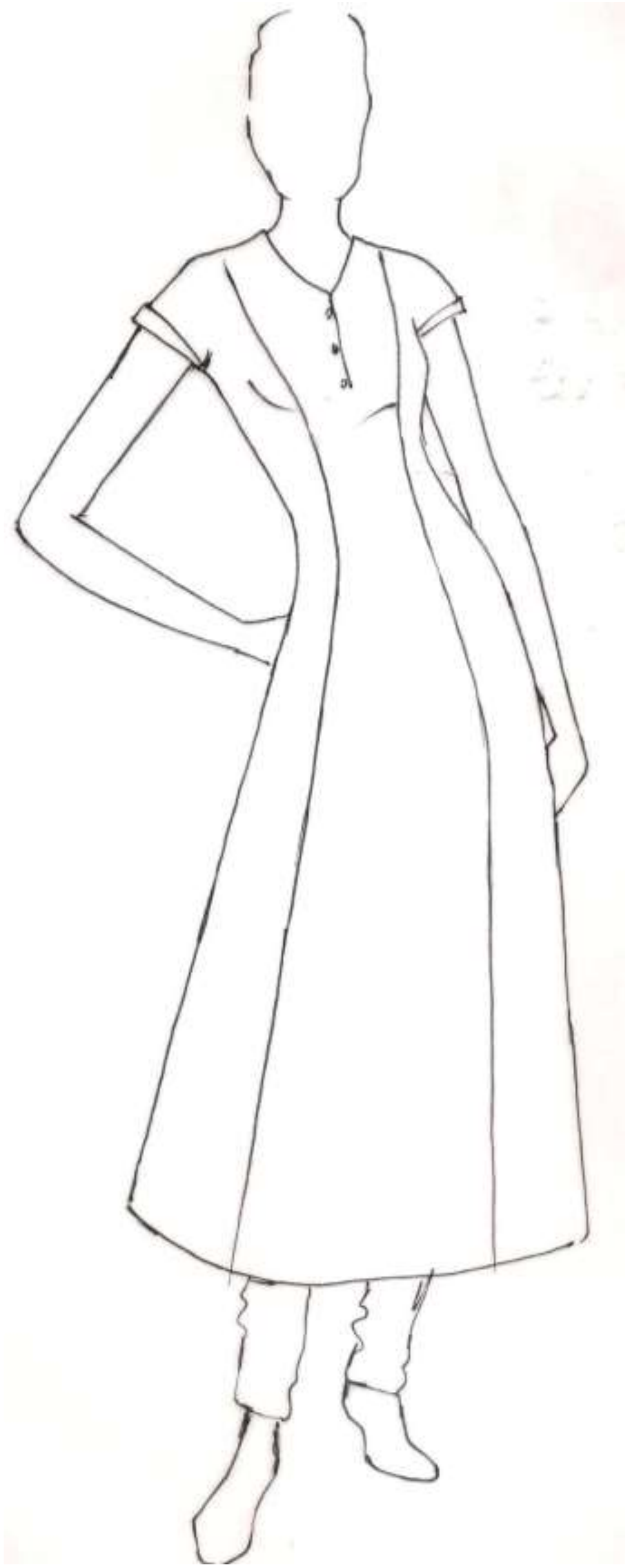

शब्दकोष

1. ए लाइनःफिट पोशाक या स्कर्ट, जिसमें ओर पक्षीय सिलाई कोण पर जाती है। एक ए लाइन स्कर्ट कूल्हों की अपेक्षा किनारी पर चौड़ी होती है लेकिन पर्याप्त रूप से सिलवटों से पूर्ण नहीं होती है।

2. बाँह का छेद (आर्म होल)ः बाँह के छेद (आर्म होल), की सीवन जहां चोली में आस्तीन से जुड़ती है, एक व्यक्ति को बिल्कुल सही फिट होने के लिए विशेष रूप से जब कपड़े बारीकी से फिट हों, बाँह के छेद में, गहराई और चौड़ाई का होना महत्वपूर्ण है।

3. आर्म स्काईः इस शब्द का उपयोग ब्लॉक या पैटर्न पर गहराई से बने बाँह के छेद (आर्म होल) के एक वक्र का वर्णन करने के लिए किया जाता है।

4. संतुलनः एक परिधान में अनुपात और लटकाव को संदर्भित करता है, फ्लैट पैटर्न काटने की विधि में फिट की जाँच करने तक यह निश्चित करना अक्सर मुश्किल होता है कि संतुलन सही है।

5. संतुलन चिह्नः पैटर्न टुकड़े के किनारों पर बने निशान यह सुनिश्चित करते हैं कि पैटर्न का टुकड़ा मेल खा रहा है। वे सभी सीवनों पर एक निर्माण गाइड के रूप में उपयोगी होते हैं, हालांकि, जब अलग–अलग आकार के टुकड़ों को एक साथ मिलाना हो तो संतुलन के निशान महत्वपूर्ण होते हैं। पैटर्न काटते समय कागज के किनारे पेंसिल से बने छोटे निशानों को नॉच भी कहा जाता है।

6.बेस्ट (तागना)ः कपड़े के टुकड़ों को अस्थायी रूप से एक साथ मिलाने के लिए हाथ या मशीन द्वारा सिलना ताकि स्थायी रूप से सिलने पर परिधान फिट हो सके।

7.घंटी (बेल) आस्तीनः आस्तीन की एक शैली है जो कोहनी या कलाई स्तर पर पूर्ण फैली होती है।

8.बायस (झुकाव)ः कपड़े के बाने के दाने को 45 डिग्री पर काटा जाता है

9. बायस कटः शॉर्ट्स, स्कर्ट, पोशाक या अंडरवियर जैसे एक कपड़े को संदर्भित करता है, जिसके टुकड़े पूरी तरह या आंशिक रूप से झुकाव पर काटे जाते हैं।

10. क्लिपः कपड़े के किनारे पर लगाया गया एक छोटा सा खरोंच या कटाव। सभी घुमावदार किनारों को छांटा जाना चाहिए ताकि कपड़े को अंतिम रूप से दबाने पर उसे समतल किया जा सके।

11.क्राच प्वाइंटः वह जगह, जहां पतलून के पैरों की भीतरी सिलाई मिलती है क्राच सीवन कही जाती है। सही स्थिति शारीरिक विशेषताओं पर निर्भर होती है लेकिन क्राच बिंदु शरीर के सामने की ओर होनी चाहिए।

12.काटने का बोर्डः एक विशेष रूप से निर्मित मुड़ा नालीदार बोर्ड, जो काटने या पैटर्न बनाने हेतु एक सतह प्रदान करने के लिए एक मेज या बिस्तर को ढकने के लिए बाहर खुलता है।

13.काटने की रेखाः सिलाई की पंक्ति या सीवन रेखाओं से परे का बिंदु जहां कपड़े को काटा जाता है। ऐसे नमूने (पैटर्न) जिनमें कोई सीवन बढ़त न हो कपड़े पर काटने की रेखा को चिह्नित करने के लिए चाक या कपड़े के पेन का उपयोग किया जाता है। एक वाणिज्यिक नमूने पर मुद्रित रूपरेखा पैटर्न और कपड़े दोनों को काटने के लिए होती है।

14. डार्टः एक त्रिकोणीय मोड़ जो धीरे–धीरे घटा कर एक बिंदु की ओर सिला जाता है। यह आसानी से 3डी मानव शरीर पर कपड़े का आकार बनाता है।

15. डार्ट टकः डार्ट को आकार देने के लिए सिलना, लेकिन डार्ट बिंदु से पहले रोक दी गई सिलाई, यह परिधान के दाईं ओर से एक टक के रूप में प्रकट होता है।

16.दोहरी छाती युक्तः. सामने से बांधने की एक शैली जो शरीर के बाईं तरफ की बजाय सामने के केंद्र पर लिपट कर समाप्त होती है।

17.दोहरे नोक वाले डार्टः इन्हें मछली डार्ट भी कहा जाता है और पोशाक में कमर को आकार देने के लिए इनका उपयोग किया जाता है।

18.ड्राफ्टिंगः इस शब्द का एक कागज के पैटर्न नमूने को अंकित करने और काटने के लिए प्रयोग किया जाता है।

19.ड्रॉ स्ट्रिंग (**खींचने** की रस्सी): एक पोशाक, स्कर्ट या ट्राउजर, या गले या किनारी बांधने या जगह पर व्यवस्थित करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला रस्सी का टुकड़ा ।

20.आसानी (आराम): यह सुनिश्चित करने के लिए कि परिधान को पहनने पर उसमें हिलने–डुलने की जगह है, माप को जोड़ी जाने वाली बढ़त। इसकी मात्रा मौजूदा फैशन के अनुसार बदलती रहती है।

21.सहजता (आसानी): अलग–अलग लंबाई और आकार के दो किनारों को जोड़ने के समय इसकी जरूरत होती है। सिलने के समय बड़ा किनारा कपड़े पर एक छोटा सा उभार बनाता है जो गतिविधियों के लिए मामूली सहजता प्रदान करता है। अक्सर बढ़त वाले किनारे पर मूल खंड की स्थिति में एक छोटा सा डार्ट होता है। सहजता के उदाहरण के लिए पीछे के कंधे से सामने के कंधे, कोहनी स्तर पर पीछे की सिलाई की अपेक्षा सामने के किनारे पर आस्तीन की सीवन, बाँह के छेद (आर्म होल) में आस्तीन के सिरे, आदि शामिल हैं।

22.एम्पायरः कमर की एक उच्च सीवन, यह एक पोशाक, अंगरखे या रात की पोशाक पर हो सकती है, आम तौर पर ऊपरी परिधान में वक्ष के ऊपर लगाई जाती है और अक्सर परिधान के निचले खंड में प्लीटें बनाई जाती हैं या कमर पर इकट्ठा किया जाता है।

23.विस्तारित कंधेः कंधे की सीवन को लंबा और बडा किया जाता है, ताकि बाँह के छेद (आर्म होल) की सीवन में बाहर की तरफ ढलान रहे और कंधे की हड्डी के ऊपर से गुजरने की बजाय हाथ के शीर्ष पर चले। हाथ को ऊपर उठाने की जगह देने के लिए बाँह के निचले हिस्से को नीचा किया जाना चाहिए।

24. झूलना (फ्लेयर): एक आस्तीन या स्कर्ट के किनारे के आकार को परिपूर्णता देने के लिए जोड़ा जाता है। एक पैटर्न काटते समय मूल आकार को ऊपर से नीचे तक काटने और केवल एक किनारे पर टुकड़े के प्रसार से फ्लेयर जोड़ा जाता है।

25.झालरः गले आस्तीन और किनारियों के लिए एक पूरी तरह गोलाकार किनारा।

26. पीछे की ओर मुड़ी फेसिंगः किनारे पर सीवन को हटा कर, एक ब्लाउज के बटन के किनारे जैसी सीधी बढ़त को परिष्कृत करने का तरीका। पैटर्न के किनारे के लिए एक पर्याप्त विस्तृत बढ़त जोड़ें और मोड़ की रेखा पर विस्तार देने के लिए सामने के भाग को उल्टी तरफ जोड़ें जो इंटरफेसिंग को एक मजबूत धार प्रदान करता है। हल्के या पारदर्शी कपड़ों में जहां सीवन भारी और दिखेगी, इस तरह की फेसिंग उपयोगी है।

27.कलाई की सीवनः एक दो टुकड़े के सामने के हिस्से को जोड़ने के लिए सिलाई।

28.झालर (फ्रिल): किसी भी चौड़ाई के कपड़े की एकत्र की हुई और एक किनारे के रूप में कपड़ा से जुड़ी हुई पट्टी।

29.गोडेटः स्कर्ट, आस्तीन और पतलून की किनारी में एक चमकदार या त्रिकोणीय पट्टी डालना।

30.कण्ठ रेखाः एक छोटी सिलाई जो अपने अंचल के लिए एक क्लासिक कॉलर को इसके छोर से जोड़ती है।

31.ग्रेडिंग आकारः शैली को बनाए रखने के लिए एक पैटर्न के दूसरे आकार से समायोजन के तरीके को संदर्भित करता है। वाणिज्यिक पैटर्न के उत्पादन में इस्तेमाल किया जाता है।

32.दानेः एक बुने हुए कपड़े में लंबाई के साथ पूरी चौड़ाई में फैलने वाले धागे की दिशा।

33. कलियांः गतिविधि में आसानी के लिए कपड़े के एक छोटे से टुकड़े को सीवन में डालना। हाथ को घुमाने की अनुमति देने के लिए कलीदार कुर्ता की आस्तीन में कलियां डालना सबसे अधिक आवश्यक है।

34.हाल्टरः गले की एक शैली जिसमें गर्दन के पीछे के आसपास से सामने बाँह के छेद (आर्म होल) तक एक पट्टा या कपड़े की एक बढ़त होती है।

35. पैबंद (पिसिंग): आकार को काटने से पहले कपड़े को जोड़ना। एक पैटर्न के टुकड़े के कपड़े की चौड़ाई की तुलना में विस्तृत होने की स्थिति में यह आवश्यक है ।

36. प्रिंसेस : शीर्ष के माध्यम से गुजर कर परिधान को आकार देने के लिए लंबाई में की गई सिलाई। यह सीवन बाँह के छेद (आर्म होल), कंधे और गले की रेखा से आरंभ हो सकती है। सिलाई को इसी के अनुसार नाम दिया जाता है। कंधे से शुरु होने वाली प्रिंसेस सीवन को शोल्डर प्रिंसेस कहा जाता है। इन रेखाओं के साथ बने कपड़ों को पैनल पोशाक भी कहा जाता है। प्रिंसेस और पैनल दोनों सीवनें आकार में होती हैं, क्योंकि इनमें चोली के डार्ट शामिल हैं और परिधान में एक नजदीकी फिट आवश्यक होने पर यह उपयोगी होता है।

37 राइजः. एक शब्द जो सामान्य रूप से पुरुषों की पतलून के संबंध में प्रयुक्त होता है, यह कमर के क्राच बिंदु से क्राच के सामने के सीवन की लंबाई को दर्शाता है।

38. आकार युक्त फेसिंगः एक कपड़े के किनारे आमतौर पर गले या आस्तीन की बढ़त को परिष्कृत करने के लिए प्रयुक्त कपड़े का आकार युक्त टुकड़ा है, जो आकार के अनुरूप होता है। परिधान की बढ़त को ट्रेस कर फेसिंग का आकार हासिल किया जाता है, फेसिंग की सीवन आम तौर पर परिधान की सीवन से मेल खाते हैं।
39. शिफ्ट (बदलाव): किसी भी लम्बाई की आमतौर पर बिना आस्तीन की एक सरल सीधी पोशाक।

40. सिकुड़नः सूती कपड़े को काटने से पहले धोया जाना चाहिए

41. वर्गाकार गर्दनः एक गले को सामने या पीछे की तरफ से वर्गाकार किया जा सकता है। गले को काफी उथला रखने पर ध्यान देना चाहिए ताकि इसमें कोई दरार न रहे।

42.स्टेः टेप, सिलाई के बंद या इंटरफेसिंग के रूप में कपड़े से जुड़ा एक अतिरिक्त टुकड़ा, जो एक सीवन के खिंचाव या आकार को कम करने के लिए जिम्मेदार हो सकता है।

43.टेपरः आकार को अचानक कम करने की बजाय धीरे–धीरे कम करना जैसे– एक पतलून का पैटर्न।

44. तम्बू (टेंट): एक पोशाक या कोट के कंधों पर लगा आकार जो सीधे या बाहर की ओर ढलान युक्त हो।

45. ट्वायलः पैटर्न संतुलन और शैली सुविधाओं आदि की स्थिति की जांच करने के लिए एक पोशाक–स्वरूप पर मलमल में बना परीक्षण फिट। ट्वायल को अलग किया जा सकता है और पैटर्न के समायोजन के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है या मूल पेपर पैटर्न पर स्थानांतरित किया जा सकता है।

46. अंगरखाः बिना आस्तीन की एक साधारण छोटी पोशाक।

47. नीचे का कॉलरः कॉलर के नीचे का हिस्सा जो मुड़ता या घूमता है।

48. बिना दबी प्लीटेंः कपड़े की समान परतें जो एक छोर पर सिली जाती हैं लेकिन उस बिंदु से नीचे नहीं दबाया जाता है।

49. वेंटः एक जैकेट की पिछली किनारी पर बना कटाव, जो जैकेट के कटाव को खींचे बिना व्यक्ति को इसे पहन कर, घूमने, मुड़ने, बैठने और जेब का उपयोग करने की अनुमति देता है, स्कर्ट की किनारी पर बने कटाव को स्लिट कहा जाता है।

50. तानाः रोल या टुकड़ा की पूरी लंबाई में चलने वाले धागे, इन्हें सीधे दाने भी कहा जाता है। पैटर्न के अधिकांश टुकड़े इसी दाने पर काटे जाते हैं।

51. बानाः बुने हुए कपड़े की चौड़ाई में चलने वाले धागे जिसे भराई के धागे या सीधे धागे भी कहा जाता है। बाने के धागे अक्सर ताने के धागे की तुलना में कमजोर होते हैं।

52. झालरः एक जेब या धारीदार सीवन का एक विशेष प्रकार के परिष्करण।

53. लपेटना (रैप ओवर) : ब्लाउज, कपड़े, स्कर्ट और जैकेट की एक शैली, जहां सामने से एक पक्ष दूसरे पक्ष पर अतिव्याप्त (ओवर लेप) होता है और अक्सर एक बेल्ट से बांधा जाता है।

54. योकः परिधान का एक छोटा टुकड़ा, जो स्कर्ट या ट्राउजर की कमर पर या एक ब्लाउज या पोशाक के कंधों पर लगा होता है। एक योक का कार्यात्मक उद्देश्य है जो आम तौर पर एक क्षैतिज सीवन प्रदान करता है, जो परिपूर्णता को थामता है। वह सीवन लाइन जिससे योक परिधान के मुख्य टुकड़े से जुड़ा होता है, योक लाइन कहलाती है। इस सीवन लाइन को पाइपिंग, फीता, रिबन आदि से विस्तारित किया जा सकता है।